समकालीन विमर्श

सम्पादक-डॉ.भगवान कदम

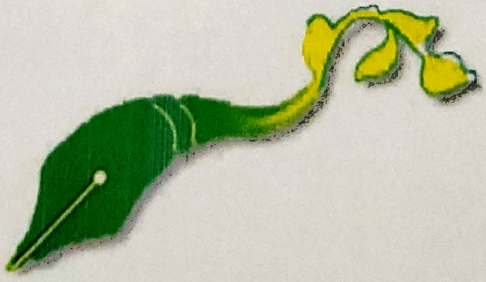

नवसाहित्यकार प्रकाशन,नांदेड़

पुस्तक : – समकालीन विमर्श
सम्पादक : – डॉ.भगवान कदम
ISBN-NO. : 978-81-947571-6-0

प्रकाशन / प्रकाशक
डॉ.सुनील जाधव
नव साहित्यकार पब्लिकेशन,
महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी.
हनुमान गढ़ कमान के सामने,
नांदेड–महाराष्ट्र–439605
मो.9405384672
www.navsahitykarpublication.com

मुद्रण–
तन्मय प्रिंटर्स,नांदेड
डॉ.सुनील जाधव,नांदेड

© सर्वाधिकार लेखक एवं
प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।

मूल्यः–150
संस्करण–प्रथम
प्रकाशन वर्ष– 2022

32.कबूतरा आदिवासी जनजाति का दस्तावेज : अल्मा कबूतरी
– *डॉ. गोविंद गुंड्प्पा शिवशेट्टे*..... 181

33.'स्त्री विमर्श के परिप्रेक्ष्य में हिंदी साहित्य'
–*श्रुतिकीर्ति सिंह*..... 187

34.दलित विमर्श : एक अध्ययन
–*डॉ.सुधिरकुमार गौतम,*..... 199

35.समाज और साहित्य में थर्ड जेंडर
–*प्रा.डॉ.सुरेखा प्रेमचंद मंत्री*..... 204

36.बाल विमर्श
–*डा.उज्वला अशोक राणे*..... 208

37.ग्रामीण जीवन मे महिलाओ की वर्तमान स्थिती
–*डॉ.उमाकांत सिताराम साळवकर*..... 211

38.सुशीला टाकभौरे की कविताओं में दलित स्त्री का सामाजिक यथार्थ
–प्रा. डॉ. यशवंतकर संतोषकुमार लक्ष्मण..... 214

39.हिन्दी कथा साहित्य में चित्रित दलित विमर्श
–*प्रा.युवराज राजाराम मुळये*..... 218

40.पर्यावरण संवर्धन : मानवी जबाबदारी
–*डॉ.जगन्नाथ धोंडीराम चव्हाण*..... 224

41.हिन्दी ग़ज़ल में दलित चेतना
–*डॉ.जियाउर रहमान जाफरी*..... 230

42.Untouchability: Its Eradication And Dalit Consciousnes
-Deepti Shukla 242

32.कबूतरा आदिवासी जनजाति का दस्तावेज : अल्मा कबूतरी

– डॉ. गोविंद गुंडप्पा शिवशेट्टे
शोधकर्ता, महाराष्ट्र महाविद्यालय, निलंगा जनपद लातूर

मैत्रेयी पुष्पा यह अनुभूति की यथार्थ अभिव्यक्ति का दूसरा नाम है। बाल्यावस्था में मिली मंदा और उसकी नियति का रूपांतरण 'इदन्नमम्'उपन्यास में हुआ। सिर्कुरा गांव के पहाड़ी पीछे बसे कबूतरा आरोपित जनजातियों पर किए जाने वाले अत्याचारों का रेखांकन सन 2000 में अल्मा कबूतरी उपन्यास के रूप में हुआ हैं। 'अल्मा कबूतरी' एक यथार्थवादी तथा सभ्य समाज को झकझोर ने वाली कृति है। भारत में आज भी कुछ ऐंसी अभागी जनजातियां हैं जिसके जीवन मैं आज तक आजादी का सूरज उग नहीं पाया। अब वह क्या जाने आजादी का अर्थ ? यही जनजातियां सभ्य समाज की नजरों में उपेक्षा घृणा के पात्र बन पुलिस अत्याचार का शिकार हो जाती है। और तो और दुर्भाग्य की बात यह है कि, कानून ने भी इन्हें नहीं बख्शा। यद्यपि देश की आजादी के बाद इन जनजातियों को सम्मान नागरिकता के अधिकार तो प्राप्त हो गये, पर जीवनयापन का कोई सम्मानजनक साधन उपलब्ध न होने के कारण इनके पुरुष अपराधीकरण और स्त्रियां देह व्यापार के लिए लाचार हैं। वे किसी समान नागरिकता के अधिकार को नहीं जानते, जानते हैं बस इतना कि, पेट के लिए रोटी लगती है, रोटी कमाने के लिए अपराध या देह व्यापार इनकी जिंदगी का हिस्सा और लाचारी भी बन गयी है। भारत की 75 साल की आजादी ने भी इन की नई पीढ़ी को सम्मान पूर्वक जीवन का कोई विकल्प नहीं दिया। कबूतरा एक ऐसा ही समाज है जिस की दास्तान, सीख को मैत्रेयी ने करीब से देखा है ,अनुभव किया है ,इसी अनुभव को बेहद यथार्थता के साथ प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित किया।

मैत्रेयी पुष्पा ने 'अल्मा कबूतरी' उपन्यास में मुख्यतः बुंदेलखंड में बसने वाली कबूतरा जनजाति के जीवन को कथानक का विषय बनाया है। यह उपन्यास यथार्थवादी उपन्यास है। इस रचना की सृजन प्रक्रिया हेतु मैत्रेयी पुष्पा को पहाड़ी के उस पार रहने वाले कबूतराओं के डेरों तक जाना पड़ा ,कई सालों तक शोध करना पड़ा, घटनाओं को जुटाना पड़ा, तब जाकर एक सशक्त रचना का निर्माण हो सका। इस उपन्यास के पात्र भी यथार्थवादी है।अल्मा ,मंसाराम (मूल नाम सुबरणसिन्ह मैत्रैयी का चचेरा भाई) कदम भाई आदि तमाम पात्र उन पर हुए अन्याय–अत्याचारों को वास्तविक रूप में व्यक्त करते हैं। प्रस्तुत उपन्यास में भारतीय तमाम आदिवासी समाज तथा उस समाज मे नारी की हैसियत को आंकने का निर्णायक प्रयास किया है। कथा भूमि बुंदेलखंड की विलुप्त होती आदिवासी

कबुतरा जनजाति है। यह अपने मूल निवास स्थान से विस्थापित हो रही है। जल, जमीन,यहां तक कि आकाश और हवा के आजाद इस्तेमाल से वंचित समाज का आईना प्रस्तुत उपन्यास है। कबूतरा जनजाति अपने आपको रानी पद्मिनी , झलकारी बाई और राणा प्रताप की संताने कहता है। पहाड़ी जंगलों में दर–दर भटकना शिकार करना तथा अपने जीविकोपार्जन के लिए चोरी करना चोरिया ना करें तो और क्या करें क्योंकि यह लोग किसी भी मूलभूत सुविधाओं के अधिकारी नहीं है। कबूतरा मैत्रेयी कबूतरांओं जीवन पद्धति पर प्रकाश डालते हुए लिखती है – "हमारे लिए वह ऐसे छापामार गुरिल्ले हैं, जो हमारी असावधानियों के दरारों से झपटा मारकर वापस अपनी दुनिया में जा छुपती है। कबूतरा पुरुष या तो जंगल में रहते हैं या जेल में... स्त्रियां शराब की भट्टियों पर या हमारे बिस्तरों पर।" 1 प्रस्तुत मंतव्य में मैत्रेयी पुष्पा दो समाज का जिक्र करती है, एक वह जो सभी ओर से विवशता का जीवन जी रहा है जो सर्वहारा है। इस वर्ग की औरतें अपने ही पुरुष के सामने पर पुरुष के बिस्तर पर सोने के लिए विवश है। दूसरा वह समाज जो अपने आप को सभ्य मानता है। जो दूसरों की गरीबी– लाचारी का नाजायज लाभ उठाना कोई इनसे सीखे। इसे कबूतरा जाति कज्जा समाज मानता है। उपन्यास का शीर्षक नायिका प्रधान है।

कथानक का आरंभ होता है कदमबाई और मंसाराम जो कि कज्जा है। जबकि कदमबाई कबूतरा आदिवासी स्त्री है। इनका आपसी संबंध कोई आंतरिक प्रेम का रूपांतरण ना होकर समाज की दो विपरीत दिशाओं के आपसी टकराहट का परिणाम है। मंसाराम ने की हुई धोखेबाजी का बदला कदमबाई नहीं ले सकी। यही उसकी सबसे बड़ी हार है। मंसाराम कदमबाई के पति जंगलिया को चोरी करवा कर धोखे से पुलिस की मुठभेड़ में मरवा डालता है। इधर कदमबाई अपने पति से मिलने के लिए अपने डेरे से थोड़ी दूर एक खेत में रात के वक्त पहुंचती है। जिस जगह जंगलिया को पहुंचना था उस जगह मंसाराम पहुंचाता है और जंगलिया की भूमिका निभाता है। उनके इस मिलन प्रसंग को मैत्रेयी इन शब्दों में व्यक्त करती है – "वादों के हिसाब से वह पास आया, वह छाया को देखते ही मदहोश हो गई। गदराई हुई गेहूं की बाली पेट को गुदगुदा रही थी, गुन–गुनी भावों ने उसका बदन बांध लिया। हाय! सदा घागरा उतारता आता था। आज पहले चोली के बटन खोल रहा है। एकांत में फुर्सत को आ गया? याद नहीं की घड़िया गिनी – चुनी है? कदमबाई ने घागरा खुद ही नीचे को सरका दिया। बंद आंखों में अपने ही गोरे बदन की छाया जगमगाए , आंखों पर रखें हाथों की उंगलियों से झांकना चाहती थी कि गर्म सांसों

ने ओठों पर कब्जा कर लिया। सारे डर भाइयों को दबाने के खातिर उसने अपनी पूर्व को भी किया आनंद लोक में कदमबाई दोगुनी ताकत से भिड़ रही थी। मिलन के डोर से बंधी स्त्री हर लमहे नई से नई मुद्राए अपनाने लगी। अब केवल वही वह थी, बाकी कोई न था। देह पर बोझ नहीं सिर्फ लहरें थीं।बॉहे ! कहॉ, भीचतें जाने की होड के कसाव थे।धरती ,धरती न थी देह के साथ उठती –दबती चादर ! आसमान न थ तारों का झमकता झूलना...देर तक वह तरंगों के साथ खेलती रही। धरती के आकाश तक झूलने पर संवारा... और उस रात में उस फसल ने, उस प्यार में कदम के गर्भ में एक अंश बूंद बढ़ने के लिए छोड़ दी।"2 यही एक बूंद परिपक्व होकर राणा के रूप में जन्म लेती है। इसी धोखे ने कदमबाई के दिल में कज्जा समाज के प्रति बदले की ज्वाला धधक रही थी। कदमबाई आदिवासी समाज की उन तमाम स्त्रियों का प्रतीक है जो इस तरह से सभ्य समाज की शिकार हो जाती है। न जाने कब कौन? कैसे ? इनके साथ धोखेबाजी करेगा क्षणभर का विश्वास नहीं है। समाज की स्त्रियों तथा पुरुषों का सभ्य समाज शोषण करता है और यह बात आम हो चली है जो पाठकों को सोचने के लिए बाध्य करती हैं। कदमबाई कबूतरों पर होने वाले अत्याचारों की भुक्तभोगी स्त्री है।

टकराहट मनुष्य समाज के जीवंतता का प्रतिरूप है। प्रस्तुत उपन्यास में सभ्य और असभ्य कहलाने वाले दो समाज के संघर्ष का चित्रण हुआ है। यह संघर्ष है कबूतरा आदिवासी और सभ्य समाज के बीच। कबूतरा जाति की औरतें सभ्य समाज से अपना बदला लेने हेतु एन–केन प्रकारेण संघर्ष करती है। कदमबाई और भूरीबाई यह स्त्री चरित्र इसके प्रमाण हैं। कदमबाई तो कामयाब नहीं हो पाई पर भूरी काफी हद तक एक सभ्य समाज का सामना करती है। भूरी का अपना तरीका है लड़ने का। वह बस्ती की पहली मां है जिसने अपने बेटे रामसिंह को कुल्हाड़ी, डंडा ना थमाकर पोथी–पाटी पकड़ाई। इसके लिए भूरी कज्जाओं, पुलिसों के बिस्तर पर सोती रही। अपना शरीर बेचती है पर रामसिंह को शिक्षित कर एक अच्छा किरदार वाला व्यक्ति बनाती है। ताकि वह सभ्य समाज से लड़ सके। रामसिंह सभ्य समाज में रहने भी लगता है पर उस समाज उसे रास ना आया फिर वह कब कबूतरा का जीवन जीने के लिए अभिशप्त बन गया। रामसिंह पुलिस के लिए खतरनाक बीमारी बन जाता है। तो पुलिस की नाक में दम कर देता है। इसी रामसिंह से अल्मा का जन्म हुआ। जो अपने समाज के लिए संघर्ष करती है। जिसके चरित्र में परिवर्तन की लावा सुलगती दिखाई देती है।

अल्मा इस उपन्यास का उत्कर्षवादी स्त्री चरित्र है। मानो कबूतरा जाति उन्नयन के लिए ही किसका जन्म हुआ है। अल्मा पढ़े–लिखे पिता की पुत्री है। पिता रामसिंह की हत्या के बाद अल्मा पर भी सभ्य समाज के हमले होते हैं। दुर्जन अल्मा को कबूतरा के घर पहुंचा देता है। दुर्जन रुपयों का लोभी है। जिसने अल्मा को सूरजभान को बेच देता दिया है। अल्मा सूरजभान के यहां कैद है, वही पढ़े–लिखे धीरज के साथ जान पहचान होने से अल्मा उसी की सहायता से सूरजभान की कोठी से भागकर विधानसभा के विधायक श्री राम शास्त्री के घर पहुंचती है। वहां वह श्री रामशास्त्री की रखैल बनकर रहती। धीरे–धीरे अपने पैर जमाती है और श्री रामशास्त्री की मानी हुई पत्नी की तरह रहने लगती है। पर अल्मा को शास्त्री के इशारों पर चलना पड़ता था। शास्त्री की हत्या हो जाने से विधायक की जगह खाली होती है और पार्टी की ओर से उनकी मानी हुई पत्नी अल्मा को प्रत्याशी के रूप में घोषित किया जाता है। अल्मा सियासत से कुछ परिवर्तन जरूर कर पाएगी यह विश्वास पाठकों को दिलाया जाता है प्रस्तुत उपन्यास के जरिए भारतीय आदिवासी समाज एक व्यापक फलक पर आया है कबूतरों की बदनुमा हांलात और कज्जाओं की घृणा ,पुलिस की अमानुष्यता , पुलिस और अपराधियों तथा राजनीतिज्ञों का गठबंधन आदि पर यह उपन्यास प्रकाश डालता है। कबूतरा जनजातियों के स्त्रियों की दशा बड़ी भयावह है, जिसका चित्रण मैत्रेयी पुष्पा ने 'गुड़िया भीतर गुड़िया' आत्मकथा में किया है –"होली के दिन थे। खेतों में गेहूं की फसलें थी। पुलिस और ठेकेदारों का हमला हुआ था। एक गर्भवती औरत को प्रसव होनेवाला था।पानी लगे गेहूं के खेत में औरत कराह रही थी। कराह को पकड़ती हुई पुलिस आगे बढ़ रही थी कि पुलिस को देखकर खेत में छिपे कबूतरा बच्चों का एक कबूतरी ने पत्थर मार–मारकर पहले पुलिस को घायल किया। आगे कोई पेश न चली तो कराहती हुई गर्भवती स्त्री को पत्थर मार–मार कर मौत के घाट उतार दिया। ऐसा सुना था तब विश्वास नहीं हुआ था। इनके पास आने–जाने के दौरान उस घटना का सत्य मेरे भीतर बादलों सा फटने लगा।"3 पुलिस और ठेकेदारों के अत्याचारों का यह प्रमाण है कि, सभ्य समाज तथा ठेकेदार कबूतरों के स्त्रियों को कभी भी छेड़ सकते थे। विरोध होने पर मौत के घाट उतारा जाता था –"अपने पति से जिसने अपनी बहन को छेड़ने वाली कज्जा से हाथापाई की थी बदले में मौत पाई।"4 कबूतरों की जिंदगी मानो कज्जाओं के लिए ही बनी है। यह समाज भूमि से,जल से, जंगल से विस्थापित हो चुका है। आराम इनकी जिंदगी में नहीं है और सुस्ती इनकी मौत में नहीं। किसी एक देश की संख्या से ज्यादा जनसंख्या का ऐसा विडम्बना पुर्ण जीवन किस

लोकतंत्र में होगा? ऐसे कई प्रश्नों से मैत्रेयी पुष्पा पाठकों से मुठभेड़ कराती है। आलोच्य उपन्यास में आदिवासी कबूतरा जनजाति का विस्थापित जीवन तथा स्त्रियों की यातनात्मक जिंदगी का खुला आईना पाठकों के सामने रखा है

पृष्ठभूमि :–इस शोध आलेख के अंतर्गत मैत्रेयी पुष्पा द्वारा लिखी उपन्यास 'अल्मा कबूतरी' में कबूतरा जनजातियों की व्यथा कथा के एवज की पड़ताल की जाएगी।

कार्यक्षेत्र :–प्रस्तुत शोधालेख का कार्यक्षेत्र मैत्रेयी पुष्पा द्वारा लिखित 'अल्मा कबूतरी' उपन्यास में चित्रित बुंदेलखंड के पहाड़ी इलाकों में रहने वाले कबूतरा जनजातियों से संलग्न है। उपन्यास में कबूतरा जनजातियों की संस्कृति, भाषा तथा उनकी दशा–दिशा को बारीकी से प्रस्तुत किया गया है। कबूतरा जैसी अनेक अदिवासी विलुप्त होती जनजातियों का जीवन बेहद चुनौतियों से भरा पड़ा है। और इसी चुनौतियों का अध्ययन प्रस्तुत शोध आलेख के अंतर्गत किया गया।

अनुसंधान का उद्देश्य :– प्रस्तुत शोध आलेख को लिखने के पीछे प्रमुख उपदेश इस प्रकार हैं –

1) आदिवासियों की पारंपरिक जीवन पद्धति संस्कृति का अध्ययन करना।

2) विशेषता विलुप्त होती कबूतरा जनजातियों की विभिन्न समस्याओं से अवगत कराना।

3)जनजातियों पर होने वाले अन्याय और अत्याचार की रोकथाम के लिए सख्त कानून की और उपलब्ध कानून को सख्ती से लागू करने की जरूरत को प्रस्तुत करना

4) आदिवासियों के लिए जंगल, जमीन आरक्षित कर उन्हें सुरक्षित करने के उपाय का सुझाव देना।

5) आदिवासी जनजातियों की नई पीढ़ी को सम्मानपूर्वक जीवन के विकल्प की तलाश करना।

शोधालेख का निष्कर्षः–मैत्रेयी पुष्पा एकमात्र ऐसी लेखिका है जिन्होने मात्र महिलाओं की समस्या को उठाया बल्कि महिलाओं मे गांव की पीछडी जातियों की विशेषतः दलित ,आदिवासी ,उपेक्षित, प्रताडित स्त्री वर्ग को लेखन के केंद्र लाया है। इसका प्रमाण है 'अल्मा कबूतरी'उपन्यास। प्रस्तुत उपन्यास कबूतरा जनजातियों की सामाजिक, अर्थिक, पारिवारिक, शैक्षिक स्थिति का लेखा–जोखा प्रस्तुत करता है। एक ओर कबूतरा जनजाति उच्च वर्ग के अन्याय एवं अत्याचार का शिकार है तो दूसरी ओर से सरकारी यंत्रणा से भी बेजार है। विशेषतः पुलिसों द्वारा रात–बेरात कभी भी कबूतरा कबिलों पर हमला करना,बिना वजह किसी को भी गिरफ्तार करना ऐसे ढेरों उदाहरण उपन्यास मे मिलते है। कज्जाओं तथा

व्यवस्था का प्रतिरोध करके यह जनजाति आपने वजुद के लिए जद्दोजहद कर रही है। कदमबाई और भूरीबाई का जीवन संघर्ष बेहद प्रेरणादायी है। उसमे नयी पीढी की स्त्री अल्मा का जीवन तो सुविधाओं से भरा है किंतु उसकी दशा भी एक रखैल से ज्यादा नहीं है। अल्मा राजनीति मे प्रवेश कर आपना और आपने समाज को आगें बढाने का एक आश्वासक स्वर देती है। यौन शोषण, शारीरिक शोषण कबूतरा जनजाति के स्त्रियों के जिंदगी का हिस्सा बन गया है। कदमबाई, भूरीबाई, अल्मा यह स्त्री चरित्र आदिवासी स्त्री जीवन की दैनिय स्थिति के उदाहरण है। यह रचना कोई काल्पनिक न होकर यथार्थवादी है।

संदर्भ ग्रंथः

1) पुष्पा मैत्रेयी –अल्मा कबूतरी –पृष्ठ संख्या 430

2) पुष्पा मैत्रेयी– अल्मा कबूतरी –पृष्ठ संख्या 22

3) पुष्पा मैत्रेयी– गुड़िया भीतर गुड़िया –पृष्ठ संख्या 274

4) पुष्पा मैत्रेयी– गुड़िया भीतर गुड़िया –पृष्ठ संख्या 275

आधार ग्रंथः

1) मैत्रेयी पुष्पा : तथ्य और सत्य संपा– दया दीक्षित सामयिक बुक दरियागंज नई दिल्ली

2) मैत्रेयी पुष्पाःस्त्री होने की कथा– संपादक –सिं विजय बहादुर –किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली

3) मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों मे स्त्री जीवन संघर्ष–डॉ. शिवशेट्टे गोविंद–विकास प्रकाशन कानपूर